कक्षा 12 – भूगोल

उत्तरमाला – 3

खंड – क : बहुविकल्पीय प्रश्न (1 × 20 = 20 अंक)

1. (ग) असमान गुरुत्वीय प्रभाव
2. (ग) 181
3. (ग) अक्ष का झुकाव
4. (क) ट्रोपोपॉज
5. (ग) 2900 किमी
6. (क) मानसून की तीव्रता पर
7. (ख) उष्ण महासागर से उत्पत्ति के कारण
8. (ग) गली अपरदन
9. (ग) निक्षेपण से
10. (ग) नदी घाटियों में
11. (घ) उपयुक्त सभी
12. (घ) सीमित भूमि पर अधिक उत्पादन
13. (घ) उपयुक्त सभी
14. (ख) स्थानीय रोजगार
15. (ख) अधिक लागत
16. (ग) सेवा क्षेत्र
17. (ग) आवास समस्या
18. (ग) ऊँचाई
19. (क) प्राकृतिक संसाधनों का असमान वितरण
20. (ग) पर्यावरण संरक्षण

खंड – ख : वर्णनात्मक प्रश्न (50 अंक)

प्रश्न 21. पृथ्वी की आंतरिक संरचना के अध्ययन के स्रोत एवं परतों की विशेषताएँ (10 अंक)

अध्ययन के स्रोत:

1. भूकंपीय तरंगें (P एवं S तरंगें)
2. ज्वालामुखी उद्गार
3. उल्कापिंड अध्ययन
4. खनन एवं ड्रिलिंग

परतें:

1. भूपर्पटी (Crust):

- मोटाई 5–70 किमी
- सिलिका एवं एल्युमिनियम (SIAL)
- महाद्वीपीय एवं महासागरीय भाग

2. मैंटल (Mantle):

- मोटाई 2900 किमी
- मैग्नीशियम एवं सिलिका (SIMA)
- संवहन धाराएँ

3. क्रोड (Core):

- बाह्य (द्रव) एवं आंतरिक (ठोस)
- निकेल एवं लोहा (NIFE)
- सर्वाधिक ताप एवं घनत्व

प्रश्न 22. भारतीय मानसून की अनिश्चितता के कारण (8 अंक)

1. एल-नीनो प्रभाव

2. जेट धाराओं में परिवर्तन
3. आईटीसीजेड का स्थान परिवर्तन
4. हिमालयी अवरोध
5. महासागरीय तापमान
6. वायुदाब प्रणाली

प्रश्न 23. मृदा अपरदन एवं मरुस्थलीकरण (8 अंक)

संबंध:

मृदा अपरदन के कारण उपजाऊ मिट्टी हट जाती है, जिससे भूमि बंजर बनती है और मरुस्थलीकरण की प्रक्रिया शुरू होती है।

नियंत्रण उपाय:

- वृक्षारोपण
- कंटूर बंधन
- अतिचराई रोकना
- सिंचाई प्रबंधन
- शेल्टर बेल्ट निर्माण

प्रश्न 24. भारत में जनसंख्या वितरण की विषमताएँ (8 अंक)

अधिक घनत्व वाले क्षेत्र:

- गंगा मैदान
- तटीय क्षेत्र

कम घनत्व वाले क्षेत्र:

- हिमालयी क्षेत्र
- मरुस्थलीय क्षेत्र

कारण:

- जलवायु
- मिट्टी
- उद्योग
- परिवहन

प्रश्न 25. औद्योगिक विकास की क्षेत्रीय असमानताएँ (8 अंक)

कारण:

- कच्चे माल की उपलब्धता
- ऊर्जा संसाधन
- परिवहन सुविधा
- पूंजी निवेश

प्रभाव:

- क्षेत्रीय असंतुलन
- शहरीकरण
- रोजगार अवसरों में असमानता

प्रश्न 26. विश्लेषणात्मक प्रश्न (8 अंक)

(क) परिवहन नेटवर्क का आर्थिक एवं क्षेत्रीय प्रभाव

- औद्योगिक विकास
- व्यापार विस्तार
- क्षेत्रीय संतुलन
- रोजगार वृद्धि

(ख) सतत विकास की भूमिका

- संसाधनों का संतुलित उपयोग

- पर्यावरण संरक्षण
- भविष्य की पीढ़ियों के लिए संसाधन संरक्षण
- सामाजिक एवं आर्थिक संतुलन